लेख

पुरुषों के लिए न्याय

मर्दानगी की नई व्याख्या

हर्ष मंदर

लगातार तीसरे वर्ष 'वैलन्टाइन डे' पर जब लोग रूमानी प्रेम का उत्सव मनाते हैं, विश्व के 160 देशों में औरतों व मर्दों ने नाच-गा कर एक ऐसे प्रेम की मांग की जो सभी लोगों की सुरक्षा, समानता और आदर पर आधारित हो।

ऐसा अनुमान है कि लगभग 100 करोड़ लड़कियां तथा स्त्रियां अपने जीवन में कभी न कभी हिंसा की शिकार होती हैं। अतः एक भूमंडलीय आह्वान किया गया था, 100 करोड़ स्त्रियों के एक साथ उठ खड़े होने का। इस पुकार ने सारे विश्व में लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा।

पिछले वर्ष इस आन्दोलन का उद्देश्य था लैंगिक हिंसा के विभिन्न रूपों के फैलाव पर ध्यान केंन्द्रित करना। दिल्ली की बस में एक छात्रा के साथ हुए पाशविक सामूहिक बलात्कार से आहत भारतीय जनमानस में इसकी विशेष प्रतिध्वनि सुनाई दी। इस वर्ष की भूमंडलीय मांग थी हिंसा के उत्तर जीवियों के लिए न्याय की। पूरे विश्व में सांकेतिक रूप से हिंसा के विरुद्ध लोगों के एक साथ उठ खड़े होने से हिंसा के उत्तरजीवियों में एकजुटता बढ़ती है, अलग-थलग पड़ जाने की भावना टूटती है तथा न सिर्फ़ उनकी शारीरिक परन्तु आत्माओं पर लगी चोट पर भी मरहम लगता है।

प्रायः यह मान लिया जाता है कि जेंडर समानता के द्वारा दुनिया बेहतर होगी, सुरक्षित और खुशहाल बनेगी तथा लड़कियों व स्त्रियों के लिए सम्मानजनक होगी। एक और बात, जो भुला दी जाती है वह यह है कि इन सबके साथ-साथ दुनिया अधिक दयालु, कम हिंसक तथा पुरुषों के लिए भी कम दबावपूर्ण होगी।

जैसा कि नैन्सी स्मिथ लिखती हैं— *हर एक वह स्त्री जो अबला का नाटक करते-करते थक चुकी है और वह जानती है कि वह सशक्त है, के साथ एक ऐसा पुरुष भी होता है जो सशक्त बने रहने का बोझ उठाते-उठाते थक चुका है क्योंकि वह कमज़ोर महसूस करता है।*

यदि इस संसार को सभी लोगों के लिए अधिक न्यायपूर्ण तथा कम जोखिम भरी जगह के रूप में विकसित करना है तो यह अत्यावश्यक है कि सिर्फ़ स्त्रियों के साथ नहीं बल्कि लड़कों के साथ भी काम किया जाए। अनेक अच्छी संस्थाएं आज मर्दानगी या किस प्रकार से समाज पुरुषों में मर्दानगी की धारणा का निर्माण करता है, के मुद्दे पर काम कर रही हैं।

इन संस्थाओं में मासवा *(मैन्स एक्शन फ़ॉर स्टॉपिंग वायलैन्स अगेंस्ट विमेन),* फ़ैम *(फ़ोरम टू एन्गेज मैन)* द *मैन एन्गेज अलाएन्स* तथा *सनम* शामिल हैं। वे लड़कों तथा पुरुषों के साथ काम करके उन्हें अपने भीतर झांकने और समझने में मदद करती हैं कि किस प्रकार से सामाजीकरण के द्वारा उन पर लगातार मज़बूत, ताक़तवर व सक्षम बने रहने के लिए दबाव डाला जाता है तथा लिंग समान संसार उन्हें भी अपनी इच्छानुसार जीने की आज़ादी देगा।

हर एक बार वह स्त्री जो भावुक औरत कहलाए जाने से थक चुकी है, के साथ एक ऐसा पुरुष भी होता है जिससे रोने का या कोमलतापूर्ण होने का हक़ छीन लिया जाता है।

पितृसत्ता सामाजिक संघटन की एक ऐसी व्यवस्था है जो बुनियादी तौर पर स्त्रियों की तुलना में पुरुष श्रेष्ठता पर आधारित है। मर्दानगी या पुरुषत्व एक सामाजिक रचना है जो मर्द

होने के तौर तरीक़ों के ज़रिए दिखाई देती है। लेकिन जब कोई पुरुष समाज द्वारा स्थापित मर्दानगी की परिभाषा पर खरा नहीं उतरता तब क्या होता है? सभी पुरुष अपने मन की कोमल भावनाओं को कुचल नहीं पाते अथवा पैसा कमाने व अन्य पुरुषों से (अब बढ़ती संख्या में औरतों से भी) होड़ करने में या परिवार पालने में सफल नहीं हो पाते। पुरुष भी आर्थिक, सामाजिक या यौन रूप से असफल हो सकते हैं और होते भी हैं, लेकिन प्रायः ऐसी असफलताओं से निपटने के लिए उनके पास आवश्यक भावनात्मक संसाधन नहीं होते।

हर एक वह स्त्री जो यौन वस्तु बनने से थक चुकी है, के साथ एक ऐसा पुरुष भी होता है जो अपनी यौन क्षमता के प्रति चिंतित होता है।

अपना दबदबा कायम रखने की आवश्यकता तथा अपनी असफलताओं से न निपट पाने की खीज पुरुषों को हिंसक बनाती है। इसीलिए अधिकांश संस्कृतियों में हिंसा, मर्दानगी का एक आवश्यक हिस्सा है। विचारक माइकल कॉफ़मैन ने पाया है कि समाज निर्मित मर्दानगी की ज़रूरी शर्तें पुरुष होने की सामान्य जैविक शर्तों की तुलना में सदैव उन पर सचेत रहने और काम करने का दबाव डालती हैं, विशेष रूप से युवकों पर। मर्दानगी या पुरुषत्व पर खरे न उतर पाने से पैदा व्यक्तिगत असुरक्षा या असफलताओं का केवल डर ही पुरुषों तथा विशेष रूप से युवकों को अकेलेपन, क्रोध, भय, आत्मदंड, आत्मघृणा और आक्रामकता की ओर धकेलने के लिए पर्याप्त है।

हर एक वह स्त्री जो प्रतिस्पर्धा करके मर्दानी कहलाती है, के साथ एक ऐसा पुरुष भी होता है जिसे अपने पुरुषत्व साबित करने का एक मात्र ज़रिया प्रतिस्पर्धा ही नज़र आती है।

मेरा यह निरंतर अनुभव रहा है कि दरअसल में सशक्त पुरुष ही दयालुता और कोमलता का बर्ताव कर सकते हैं। वे कमज़ोर तथा असुरक्षित पुरुष होते हैं जो हिंसा का प्रयोग करते हैं। आज कहीं अधिक संख्या में स्त्रियां श्रम बाज़ार में प्रवेश कर रही हैं परन्तु असमान शर्तों पर कम वेतन, अधिक शोषण, हिंसा का ख़तरा और सामाजिक सुरक्षा के अभाव के साथ। फिर भी मर्द असुरक्षित और परेशान हैं। हिंसा, उन्हें अपनी असुरक्षा और आत्मसम्मान की कमी

की भरपाई करने और क्षणिक ताक़त का अहसास देने में मदद करती है।

हर एक वह औरत जिसे सार्थक रोज़गार या समान वेतन से वंचित किया जाता है, के साथ एक ऐसा पुरुष भी होता है जिसे एक और सम्पूर्ण इंसान का आर्थिक बोझ उठाना पड़ता है।

सफल और ताक़तवर पुरुष जिनके पास वर्ग, धन, सम्पत्ति, नस्ल की ताक़त होती है अपने सम्पूर्ण आधिपत्य के एक भाग के रूप में औरतों के ख़िलाफ़ हिंसा का इस्तेमाल करते हैं। पुरुष न सिर्फ़ स्त्रियों बल्कि अन्य पुरुषों को भी दबाने की कोशिश करते हैं। दबे हुए शोषित पुरुष औरतों पर हिंसा करके अपनी खोई हुई मर्दानगी को दोबारा पाने की कोशिश करते हैं। यही इनकी सामाजिक शिक्षा है। औरतों के ख़िलाफ़ हिंसा दरअसल में हारे हुए पुरुषों का अंतिम हथियार है।

आज अनेक स्त्रियों में समानता का जज़्बा पैदा हो गया है और वे अपनी दिल की सुनने और अपनी छिपी प्रतिभा को निखारने के लिए घर के साथ-साथ बाहर भी अनेक बाधाओं से संघर्ष कर रही हैं।

यह पुरुष हैं, जिन्हें अब सीखने की ज़रूरत है कि अपना हक़, सुविधाएं, ताक़त छोड़ें और समझें कि ऐसा करके वे स्वयं भी मुक्त हो जाएंगे।

हर एक वह औरत जो अपनी आज़ादी की दिशा में एक कदम उठाती है, के साथ एक ऐसा पुरुष भी होता है जो समझ पाता है कि उसकी आज़ादी की राह भी कुछ सरल बना दी गई है।

***हर्ष मंदर** जाने माने विचारक व सामाजिक कार्यकर्ता हैं।*